माध्यमिक स्तर के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन

Madhyamik Star Ke Sehari Aur Gramin Shetron Ke Vidyarthiyon Ki Samayojan Samasya Ka tulnatmak Aadhyayayn

Dr. Devorshi Kumar Shukla

Principle in Shri Vasudev Basic Teacher Training Institute Morena Madhya Pradesh

----------♦----------

शिक्षा एक ऐसी विद्या है जिसके माध्यम से ही किसी भी समाज में पतिवर्तनषीलता आती है। परिणामस्वरूप वह समाज विकास की ओर गतिषील होता है और यही विकसित समाज ही व्यक्ति को सभ्य बनाने का कार्य करता है किन्तु जिन व्यक्ति व समाज को षिक्षा व सभ्य समाज से संपर्क नहीं होता है उनका विकास अवरूद्ध हो जाता है और वह विकास की मुख्यधारा से कटे रहते हैं।

प्राचीन काल में हमारी षिक्षा प्रणाली केवल दर्षन पर आधारित थी किन्तु वर्तमान षिक्षा प्रणाली मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं बालकेन्द्रित है। यह कारक शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। इसका दुष्प्रभाव अधिकतर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर दिखाई पड़ता है क्योंकि यहां पर सुविधाओं का अभाव पाया जाता है तथा अप्रषिक्षित अध्यापकों की कमी एवं विद्यालय–विद्यार्थी अनुपात की कमी साथ ही संचार साधनों का अभाव है। जिससे इनका समायोजन नहीं हो पाता है। वहीं दूसरी तरफ शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों में शैक्षणिक आदि सुविधाएं अत्यधिक प्राप्त होने के कारण इन विद्यार्थियों का समायोजन शीघ्रता से हो जाता है। इन सबके बावजूद भी देखा गया है कि कई महान लोग ग्रामीण क्षेत्रों से उत्पन्न हुए है। जैसे भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक, बी. आर.अम्बेडकर, लाल बहादुर शास्त्री, डॉ0 राधाकृष्णन सर्वपल्ली, डॉ अब्दुल कलाम आजाद आदि रहे हैं।

अतः इस विषय पर अवलोकन के पश्चात शोधकर्ता के मस्तिष्क में जिज्ञासा उत्पन्न हुई थी। शहरी क्षेत्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों में किसका समायोजन अधिक अथवा कम होता है। अतः शोधकर्ता ने इस समस्या का चयन किया है।

अध्ययन का उद्देष्य :

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देष्य माध्यमिक स्तर के शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

शोध की परिकल्पना :

1. माध्यमिक स्तर के शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध की प्रक्रिया :

(अ) **शोध विधि** – प्रस्तुत शोध अध्ययन सर्वेक्षण विधि के आधार पर किया गया है।

(ब) **समष्टि** : मुरैना जनपद के माध्यमिक विद्यालय के कक्षा–9 के सभी छात्र–छात्रा इस शोध जनसंख्या के अन्तर्गत आते हैं।

(स) **न्यादर्ष** : मुरैना जनपद के मध्यप्रदेष माध्यमिक षिक्षा मण्डल द्वारा संचालित विद्यालय में अध्ययनरत शहरी ग्रामीण 160 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

शोध उपकरण :

प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन समस्या के मापन के लिए आर. पी. सिंह तथा ए. के. पी. सिन्हा द्वारा निर्मित ए.आई.एस.एस. द्वारा किया गया है। यह परीक्षण माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों अर्थात् 14 से 18 वर्ष के बीच के बालकों की समायोजन समस्या, सांवेगिक, सामाजिक, शैक्षिक के आधार पर मापता है। इसके अंकन के लिए अंकन कुंजी परीक्षण निर्माता द्वारा दी गयी है।

सांख्यिकीय तकनीक :

माध्यमिक विद्यालय के शहरी व ग्रामीण छात्र–छात्राओं के समायोजन की समस्या का अध्ययन व विष्लेषण करने के लिए मध्यमान, विचलन, मान, टी–परीक्षण तथा सार्थकता स्तर का प्रयोग किया गया है।

तालिका – 1

क्रम सं0	स्मूह	माध्य अन्तर	मानक त्रुटि	टी0–मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	शहरी विद्यार्थी N=80	07	5.36	0.847	df(158) 0.01 2.60
2.	ग्रामीण विद्यार्थी N=80				

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट है कि टी0मूल्य 0.847 है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है और स्पष्ट है कि शहरी विद्यार्थी शैक्षिक, सामाजिक व सांवेगिक समायोजन ग्रामीण की अपेक्षा बेहतर है।

तालिका – 2

क्रम सं0	स्मूह	माध्य अन्तर	मानक त्रुटि	टी0–मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	शहरी छात्र N=40	40	1.16	3.45	df(78) 0.01 2.64
2.	ग्रामीण छात्र N=40				

उपरोक्त से स्पष्ट है कि टी0 मूल्य 3.45 ज्ञात किया गया है जो सार्थकता स्तर 0.01 से (78) के मान 2.64 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है। इससे स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्रों के छात्रों में समायोजन ग्रामीण क्षेंत्रों के छात्रों की अपेक्षा अधिक है। ग्रामीण छात्रों में सामाजिक शैक्षिक तथा सांवेगिक रूप से अस्थिर पाये जाते हैं।

तालिका – 3

क्रम सं0	स्मूह	माध्य अन्तर	मानक त्रुटि	टी0–मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	शहरी छात्राएं N=40	11	1.33	8.27	df(78) 0.01 2.64
2.	ग्रामीण छात्राएं N=40				

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि टी0 मूल्य 8.27 है जबकि सार्थकता स्तर 0.01 पर क[78द्ध के 2.64 से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है और इससे स्पष्ट है कि शहरी छात्राएं ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा अधिक समायोजित हैं। सुविधाओं के अभाव के कारण ही ग्रामीण छात्राओं के समायोजन में अस्थिरता पायी जाती है।

निष्कर्ष :

1. माध्यमिक विद्यालय के शहरी विद्यार्थी अपेक्षाकृत ग्रामीण विद्यार्थियों से अधिक समायोजित होते हैं।
2. ग्रामीण छात्रों की अपेक्षाकृत शहरी छात्र अधिक समायोजित होते हैं।
3. ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षाकृत शहरी छात्राएं अधिक समायोजित होते हैं।
4. समायोजन पर क्षेत्र का प्रभाव पड़ता है।
5. समायोजन में लिंग का प्रभाव पड़ता है।

सुझाव :

उपरोक्त अध्ययन के पश्चात सभी विद्यार्थियों का समायोजन समान रूप से हो इसके लिए शोधकर्ता द्वारा सुझाव निम्नवत है :–

1. अधिकतर सुविधाएं शहरी क्षेत्रों तक सीमित हैं उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाया जाए।
2. विद्यालय विद्यार्थी अनुपात को कम किया जाय।
3. प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या बढ़ायी जाय।
4. ग्रामीण क्षेत्रों में गुणात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराए जाय न कि मात्रात्मक।

सन्दर्भ सूची :

1. अग्रवाल, आर0एन0 और अस्थाना : ''**मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन''** विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1987
2. कुमारी, मिथिलेष (1975) : ''**छात्राध्यापिकाओं की कुशलता पर समायोजन व चिन्ता के प्रभाव का अध्ययन''** लघुषोष प्रबंध आगर विष्वविद्यालय, आगरा।
3. सुस्ता, एस0पी0 : ''**भारतीय शिक्षा तथा इसकी समस्याएं''** शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. सिंह, आर0पी0 और सिन्हा, एन0के0पी0 : ''**एडजस्टमेन्ट इन्वेन्ट्री फार स्कूल स्टूडेन्ट्स** (ए0आई0एस0एस0) 1993
5. सिंह, अरूण कुमार : '**उच्च शिक्षा मनोविज्ञान**', पटना प्रकाषन, 2004
6. पाठक, पी.डी. : '**शिक्षा मनोविज्ञान**', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2009